INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January-2018

SPECIAL ISSUE - XXXIII

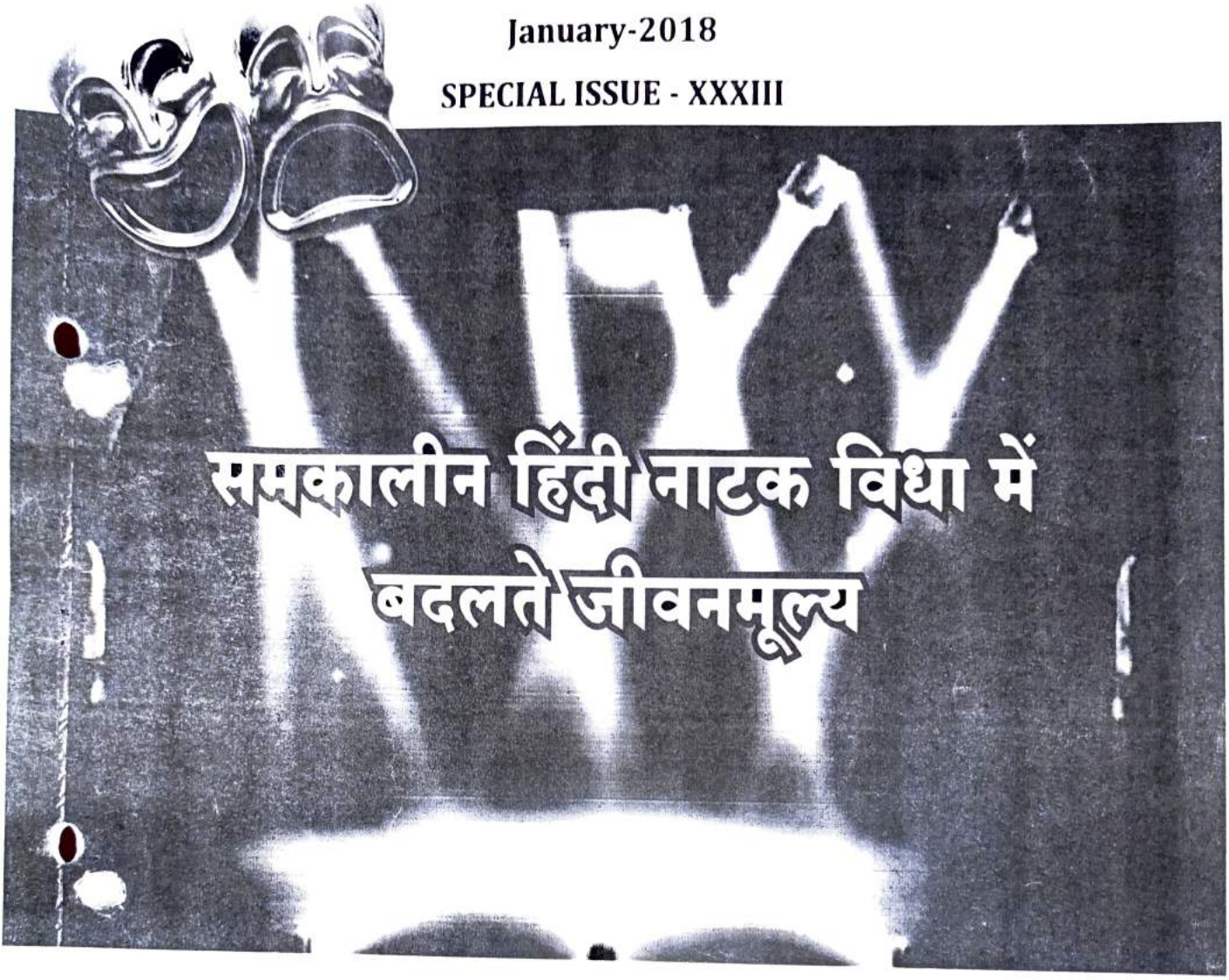

समकालीन हिंदी नाटक विधा में बदलते जीवनमूल्य

अतिथी संपादक :
डॉ. आर.के. दातीर
प्राचार्य,
एस.एम.बी.एस.टी. महाविद्यालय, संगमनेर,
तह. संगमनेर, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक :
डॉ. धनराज धनगर
सहाय्यक प्राध्यापक,
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला,
तह. येवला, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक कार्यकारी संपादक : **डॉ. शशी सालुंखे**
एस.एम.बी.एस.टी. महाविद्यालय, संगमनेर, तह. संगमनेर, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal List No. 40705 & 44117
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor
- International
- Indian

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) – 3.009, (GIF) – 0.676 (2013)
Special Issue 33 : समकालीन हिंदी नाटक विधा में बदलते जीवनमूल्य | January 2018
UGC Approved No. 40705 & 44117

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक	पृ.क्र.
१	रामकुमार वर्मा के एकांकीयो पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव	- डॉ. के.व्ही.कृष्णमोहन	०७
२	सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में सामाजिक मूल्य	- डॉ. दत्तात्रय टिळेकर	११
३	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के नाटक में राजनीतिक व्यंग	- प्रा. अशोक उघडे	१५
४	डॉ. शंकर शेष के नाटकों में बदलते सामाजिक मूल्य	- डॉ. अनुप दळवी	१८
५	समकालीन नाटकों में व्यंग	- डॉ. मीनल बर्वे	२१
६	समकालीन नाटक में बदलते जीवनमूल्य	- डॉ. भरत शेणकर	२५
७	हिंदी तथा असमीया नाटक : विहंगम दृष्टि से अवलोकन	- नंदिता राजबंशी	२७
८	शंकर पुणतांबेकर के नाटकों का मूल्योन्मुख परिदृश्य	- डॉ. भाऊसाहेब नवले	३२
९	'कल दिल्ली की बारी हैं' नाटक में बदलते राजनीतिक मूल्य	- डॉ. उत्तम थोरात	३६
१०	शिक्षा जगत् की वास्तविकता - 'एक और द्रोणाचार्य'	- डॉ. सुनील चव्हाण	३९
११	समकालीन प्रतिक एवं व्यंग नाटकों में 'बकरी' की बेजोडता	- डॉ. प्रेरणा उबाळे	४१
१२	समकालीन हिंदी नाटकों में धार्मिक मूल्य	- डॉ. ऐनूर शेख	४६
१३	समकालीन नाटक में शिल्पगत आधुनिकता - मन्नू भंडारी लिखित 'बिना दीवारों के घर' : एक मूल्यांकन	- सुनीता हुन्नरगी	५०
१४	हिंदी नाटक में बदलते नैतिक मूल्य	- डॉ. एन.एस. परमार	५३
१५	समकालीन हिंदी नाटक में सामाजिक मूल्य	- प्रा. सोनाली हरदास	५९
१६	विष्णू प्रभाकर के नाटकों में बदलते जीवन मूल्य	- डॉ. साहेबराव गायकवाड	६४
१७	समकालीन हिंदी नाटकों में सामाजिक चेतना	- डॉ. प्रमोद पडवळ	६८
१८	'आषाढ का एक दिन' नाटक में ध्वनि और प्रकाश योजना	- प्रा. जयराम गाडेकर	७१
१९	समकालीन काव्य-नाटक 'एक कंठ विषपायी' में आधुनिकता	- डॉ. वंदना काटे	७४
२०	स्त्री-पुरुष संबंध : 'युगे युगे क्रांती'	- प्रा. मंगला भवर	७७
२१	समकालीन हिंदी नाटकों में सामाजिक चेतना	- डॉ. अनिता वेताळ	८१
२२	सुरेंद्र वर्मा के 'सेतुबंध' नाटक में मनोविज्ञान	- प्रा. दशरथ खेमनर	८४
२३	समकालीन नाटकों में बदलते सामाजिक मूल्य	- डॉ. एम. बी. राठोड	८८
२४	नाटक : 'आधे –अधुरे' – एक मूल्यांकन	- डॉ. महादेवी गुरव	९१
२५	'एक कंठ विषपायी' में युगीन संदर्भ	प्रा. अनंत केदारे	९५
२६	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में अभिव्यक्त बदलते आर्थिक मूल्य	- डॉ. नानासाहेब जावळे	९९
२७	समकालीन सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज 'कोर्ट मार्शल'	- डॉ. जितेंद्र पाटील	१०३
२८	हिंदी नाटक और रंगमंच पर लोकनाट्य का प्रभाव	- डॉ. मनीषा ठक्कर	१०[illegible]
२९	समकालीन हिंदी नाटकों में सामाजिक चित्रण	- विद्या नलावडे	१०[illegible]
३०	'द्रोपदी' नाटक मी चित्रित बदलते पारिवारिक जीवनमूल्य	- प्रा. दिपाली तांबे	११[illegible]
३१	समकालीन नाटक और रंगमंचीयता	- प्रा. वाय.एस. गातवे	११[illegible]
३२	समकालीन हिंदी नाटकों में बदलते सामाजिक मूल्य	- प्रा.प्रवीण तुपे	११[illegible]
३३	हिंदी नाटक की अवधारणा और विकास	- डॉ. राहुल उठवाल	१२[illegible]

International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN :
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2015) | 2348-7143
Special Issue 33 : समकालीन हिंदी नाटक विधा में बदलते जीवनमूल्य | January
UGC Approved No. 40705 & 44117 | 2018

(41)

नाटक : 'आधे-अधूरे' - एक मूल्यांकन

डॉ. महादेवी गुरव
जी.आय.बागेवाडी डिग्री महाविद्यालय,
निप्पानी, कर्नाटक

प्रस्तावना :-

हिन्दी नाट्य साहित्य का आरंभ संस्कृत के नाट्य साहित्य के आधार पर ही माना जाता है । हिन्दी में नाटक की रचना बहुत देरी से हुई अंग्रेजी राज्य में जिस रंगमंच की स्थापना हुई वह उर्दू वालों के हाथ में था राष्ट्रीय जाग्रति के साथ ही लोगों का ध्यान हिंदी की ओर आकृष्ट हुआ तबसे हिन्दी गद्य विकास में तेजी आ गई और नाटक लिखे जाने लगे । इसलिए हिन्दी नाटको के वास्तविक जन्मदाता "भारदेंतु हरिचंद्र" को मानते है । इनके पहले (पूर्व) भी नाटक लिखे गये लेकिन नाटकीय गुणो सें वंचित होने के कारण उनको 'नाटक' की श्रेणी में नही रखे गये । महाकवि देव का 'देवमाया प्रपंच' और ब्रजवासी दास कृत "प्रबोध चंद्रोदय"नाटक है बनारसीदास जैन का "समय सार" जो आध्यात्मिक विषय पर उत्तम नाटक लिखा है वास्तव में यह एक काव्य-ग्रंथ माना गया । इसके उपरांत मध्यकाल में इंग्लैण्ड आदि देशो में भी नाटकों का आरंभ धार्मिक नाटकों से हुआ था उनको 'मिस्ट्री प्लेज' अर्थात रहस्य संबंधी नाटक कहते है । इनमें धैर्य, ईर्ष्या, पाप, पाखण्ड, दया, आदि भाव पात्रो के रुप में आते है । इस प्रकार पूर्व हरिश्चंद्र काल में नेवाजकृत-"शंकुतला" नाटक हृदयरामकृत - 'हनुमन्नाटक' उल्लेखनीय है। सबसे पहला नाटककार भारदोंदु हरिचंद्र जीने कई संस्कृत और बंगला नाटकों के अनुवाद किए बाद में स्वतंत्र नाटक लिखने लगे इनके १४ नाटक है । इनमे सत्य हनिश्चंद्र, मुद्राराक्षस नील देवी, भारत दुर्दशा अन्धेर नगरी, चंद्रावली आदि प्रमुख मानते है । इनके समय अन्य नाटककारो ने भी नाटको की रचना करके नाटक साहित्य में योगदान दिया है इनमे, पं. लक्ष्मीनारायण मीश्र, सेठ गोविंददास, हरिकृष्ण प्रेमी, इसी प्रकार व्दिवेदी युग में बाबू गंगाप्रसाद एम्.ए. ने शेक्सपियर के बहुत से नाटको का हिंदी में अनुवाद करके हिंन्दी नाट्य साहित्य में अमर किर्ति प्राप्त की । मुंशी प्रेमचंद ने आधुनिक अंग्रेजी नाटककार गार्ल्सवार्दी के नाटकों का अनुवाद किया बाद में उपन्यास विद्या की ओर वह अपनी लेखनी चलयी । नवजागरण काल के नाटककारों ने जैसे जयशंकर प्रसाद के नाटकों में अजात शत्रु, अनमेजय का नागयज्ञ, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त विशाखा, कामना, एक घूँट इनके उच्चकोटि के नाटक सराहनीय है जिससे हिन्दी नाट्य साहित्य में चार चाँद लगाकर विकास में योगदान देकर अक्षय किर्ती हासिल की है ।

समकालीन हिन्दी नाटक की परंपरा स्वतंत्रता के उपरांत चली । समकालीन नाटक की यह चेतना तत्कालीन वर्तमान स्थिति तथा परिवेश के दायरे से गुजर रही है । वास्तविक यथार्थ का दस्तावेज हम समकालीन नाटकों में देख सकते है । इसमें व्यक्ति और समाज दोनो अपने में समेटकर संवेदनशीलता का यथार्थ चित्रण इन समकालीन नाटको के माध्यम से अंकित किया गया है । डॉ. दिनेश चंद्र वर्मा जी इसके संदर्भ मे एक ओर लिखते है - "आज का नाटककार रचना में भोगे हुए यथार्थ स्तर मे संबंध विभिन्न सामाजिक राजनीतिक और औद्योगिक जीवन की नाट्य स्थितियो को अभिव्यक्ति का आधार बना रहा है । दूसरे शब्दों में वह परिवेश के बोध की संवेदना, बाह्य और आंतरिक विसंगतियो, अंर्तीवदो ओ,